SHANZAI
Rissho Kosei-kai Vol. 91
Buddha's Wisdom Changes Your Life
4 2013

GUIDANCE BY PRESIDENT NIWANO

आश्चर्य से निर्माण

by Nichiko Niwano
President of Rissho Kosei-kai

जीवन के अभिप्राय का अन्वेषण करना

हमारा रुझान है कि जब तक कोई ख़ास प्रोग्राम न हो तब तक हम अकसर ऐसे दिन बिताते हैं, जिन दिनों में अदलबदल कम होता है| जिंदगी बिताने में बनावट भर जाती है और अदलबदल मालूम नहीं पड़ता| लगता है कि हम सोचते हैं कि हम ऐसी बातें या चीज़ें देखते हैं जो बिना आशा किए ज़्यादा हैं, लेकिन असल में हम उन्हें देखते नहीं हैं| इस दुनिया में हमेशा 'हर दिन एक नया दिन है', उसके बावजूद भी विभिन्न परिवर्तन को हम नज़र अंदाज़ कर देते हैं और ऐसा हो सकता है कि हमारी भावुकता सुस्त हो गई है अथवा कल्पना-शक्ति या सृजनशीलता खो गई है|

भली-भाँति सोचने पर हमारे आसपास अजीब या अपरिचित बातें ज़्यादा मौजूद हैं| ऐसा कहना ठीक होगा कि अजीब बातें ही रहती हैं| मानव-जाति कहाँ से आई है और कहाँ जाएगी? इस तरह हमें अपने बारे में कुछ पता नहीं चलता है|

लेकिन हम कभी-कभी वैसी अजीब बातों पर सवाल तक नहीं उठाते| उसी की वजह से जापान के 'एदो' काल में एक उपन्यासकार 'दोप्पो कुनिकिदा(1871-1908)' ने अपनी रचना में एक अभिनेता से कहलवाया है, 'ताज्जुब में आना ही मेरी इच्छा है|' यानी 'विश्व का अनोखापन जानने की इच्छा नहीं, अनोखे विश्व पर चकित होना चाहता हूँ|'

हम अकसर आदत से जो आलसी जिंदगी बिताते हैं, उसका तोड़-फाड़ करने के लिए मैं सोचता हूँ कि 'अनोखापन जान लेना' या 'अद्भुत होना' बहुत ज़रूरी है| ऊपर लिखा है कि शुरू-शुरू से हम कुछ मालूम हुए बिना जीते हैं, इसलिए ऐसा कहना में ज़्यादती नहीं होगी कि चौकसी या चेतना ही मानव को परिपक्व बना देती है और भावुकता को सँवार-सुधार देती है| आखों के सामने

घटित बातों को ख़ालिस मिज़ाज से देखने पर आम रोज़मर्रे में भी व इंसानी रिश्ते में भी ताज़गी-भरी ईजाद या ताज्जुब, वा दिल का जोश हो सकता है|

सीधा-सादा बनने से

ताज़ा ईजाद कहने पर इस अप्रैल में अदलाबदलियाँ ज़्यादा होती हैं और ऐसे लोग भी ज़्यादा होंगे, जो नए लोगों से मिलेंगे या नई आबोहवा से छुएँगे| जो लोग नई हालत

को ठीक से ग्रहण नहीं कर पाते हैं,उनके लिए ऐसा समय भी है जब उनका मन उदास हो जाता है। जैसा कि मेरी हालत भी वैसे हुआ करती थी, इसलिए वह मनोभावना अच्छी तरह समझ सकता हूँ।

फिर भी जान-बूझकर कहूँगा तो यह भी कहा जा सकता है कि नई मुलाक़ात तो ऐसा अच्छा मौक़ा हो सकता है, उस समय हम अनजान ख़ुद की खोज कर पाएँगे। जब कोई आदमी अपने को अदलाबदली के अनुकूल ढाल लेता है तब यह मतलब हो जाता है कि उसपर नई मुलाक़ात से प्रेरणा या आबोहवा की अदलाबदली का असर हुआ है। उसका मतलब और ज़्यादा सृजनात्मक जीवन जीना है और मानविक वृद्धि में बढ़ावा देने के साथ जिंदगी में ज़रूरी बातों का ईजाद करने का मौक़ा भी है।

तो रोज़ की छोटी बदली पहचान लेने के लिए या मुलाक़ात को बढ़ती या ख़ुशी में बदलने के लिए क्या ज़रूरत होगी?

उन तरकीबों में एक है भोला-भाला बनना। जब काम करने में कमज़ोरी महसूस हो जाती है तब यह हालत ज़्यादा हो जाती है कि हम पसंद-नापसंद की अपनी भावना या सँकड़े मूल्यांकन में जकड़े जाते हैं, इसी वजह से हम कभी-कभार ज़िद करने में मुस्तैद हो जाते हैं। जापान में 'क्योतो' महिला विश्वविद्यालय की प्रवर्तक सुश्री 'वारिको काई' की एक गाथा है, 'चट्टानें भी हैं व पेड़ की जड़ें भी, पर पानी तो सरसर, सिर्फ़ सरसर चलता है।' इस तरह आँखों के सामने जो घटित है उसे वैसे ही अपनाने का भोलापन ही एक मुलाक़ात को क़ीमती चीज़ में बदलने की तरकीब होगी। अथवा चाहे मैं कुछ नहीं करता, पर जो कोई रोज़ कपड़े धोता है उसके होने से मैं सुहावना जीवन बिता सकता हूँ। उसके बारे में जब हम 'धन्यवाद' का आदर-भाव कह देंगे, तो आदी हुए परिवार आदि जिगरी नाते के बीच में भी ताज़ा हवा चलने लगती है। वैसे ही भोली एहसानमंदी से पैदा होने वाले छोटे एहसास के फैलाव में जिंदगी की यह हालत ज़रूर महसूस हो जाती है, 'अब जो जान है, उसके लिए धन्य है।'

थोड़े दिनों में शाक्यमुनि का जन्मदिवस(8 अप्रैल को) आ रहा है, जिस दिन उनका अवतार हुआ था। लोगों को शाक्यमुनि के तईं श्रद्धा की जो भावना थी, उससे भावी पीढ़ी ने कहलवाया है, 'वे दूसरे लोक से उतर आए हैं।' उस मतलब में ऐसा कह सकते हैं कि वह बात भी आश्चर्यान्वन से उत्पन्न हुई उन्मुक्त कल्पना है। हम भी परम सत्यलोक से आए हैं, इसलिए हम भी तथागत हैं। इसीलिए पानी के बहाव की तरह यह महत्त्व है कि हम सत्यता का अध्ययन करते रहें।

From *Kosei,* April 2013.

Rissho Kosei-kai

Rissho Kosei-kai is a lay Buddhist organization whose holy scripture is the Threefold Lotus Sutra. It was established by Founder Nikkyo Niwano and Cofounder Myoko Naganuma in 1938. This organization is composed of ordinary men and women who have faith in the Buddha and strive to enrich their spirituality by applying his teachings to their daily lives. At both the local community and international levels, we, under the guidance of President Nichiko Niwano, are very active in promoting peace and well-being through altruistic activities and cooperation with other organizations.

RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES

SHAN-ZAI Vol. 91 (April 2013)

【Published by】 Rissho Kosei-kai International Fumonkan, 2-6-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537 Japan TEL: 03-5341-1124 FAX: 03-5341-1224 E-mail: shanzai@kosei-kai.or.jp
Senior Editor: Shoko Mizutani Editor: Etsuko Nakamura Copy Editors: Yoichi Yukishita,
Editorial Staff: Shiho Matsuoka, Yukino Kudo. Kaoru Saito, Mayumi Eto, Sayuri Suzuki, Eriko Kanao, Sachi Makino and Yurie Nogawa

*SHAN-ZAI will sometimes be published in other languages in addition to "Japanese", "English", "Chinese" and "Korean". If you have any questions or comments, please contact us at the above address. *Please request permission to use contents of SHAN-ZAI to Kosei-kai International.*